

मंगल भवन अमंगल हारी
मंगल भवन अमंगल हारी
दरवहु सुदसरथ अचर बहारी
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम - २

हो, होइहै वही जो राम रचिाखा
को करे तरफ़ बढ़ाए साखा

हो, धीरज धरम मतिर अरु नारी
आपद काल परखयि चारी

हो, जेहकिे जेहपिर सत्य सनेहू
सो तेहि मिलिय न कछु सन्देहू

हो, जाकी रही भावना जैसी
रघु मूरतदिखी तनि तैसी

रघुकुल रीत सदा चली आई
प्राण जाए पर वचन न जाई
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम

हो, हरअनन्त हरकिथा अनन्ता
कहहि सुनहि बहुवधि सब संता
राम सयिा राम सयिा राम जय जय राम